

1.1. भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ (General Features or Common Characteristics of Indian Philosophy)

भारतीय दर्शन वैविध्यपूर्ण है। इसके विभिन्न संप्रदाय विभिन्न विचारधाराओं के समर्थक हैं। इनमें कुछ आस्तिक हैं, तो कुछ नास्तिक। फिर भी, कुछ ऐसी सामान्य बातें अवश्य हैं, जिनपर सभी भारतीय संप्रदाय एकमत हैं। इन्हीं सामान्य बातों को भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताओं की संज्ञा दी जाती है। ये प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं—

(i) **जीवन के प्रति निश्चित दृष्टिकोण**—पाश्चात्य विचारकों के लिए दर्शन एक मानसिक व्यायाम (mental exercise) मात्र है। वहाँ दर्शन की उत्पत्ति मानव-जिज्ञासा की शांति के लिए होती है। किंतु भारतीय दर्शन को केवल मानसिक कसरत नहीं कहा जा सकता। इसका व्यावहारिक पक्ष (practical aspect) इसके सैद्धांतिक पक्ष से अधिक सबल है। यह जीवन के अत्यंत नजदीक है। बुद्धि को संतुष्ट करना ही इसका लक्ष्य नहीं है, बल्कि ज्ञान के प्रकाश में जीवन को सुव्यवस्थित बनाना इसका मुख्य उद्देश्य है। जीवन की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ना भारतीय विचारक अपना पवित्र कर्तव्य मानते हैं। डॉ० राधाकृष्णन और मूर भी इस मत का समर्थन करते हैं।¹ इस प्रकार, भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण व्यावहारिक है।

(ii) **भारतीय दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असंतोष के कारण होती है**—विश्व में दुःख एवं बुराई का साम्राज्य पाकर भारतीय विचारक एक प्रकार के आध्यात्मिक असंतोष (spiritual disquiet) का अनुभव करते हैं और फलस्वरूप उनका दार्शनिक चिंतन आरंभ होता है। भारतीय विचारकों का प्रधान लक्ष्य मानव को दुखों से मुक्त करना है। महात्मा बुद्ध ने अपने दर्शन में दुःख का विशद वर्णन किया है। इनके चार आर्यसत्य दुःख के विचार पर ही आधृत हैं—

- (क) दुःख है (There is suffering);
 - (ख) दुःख का कारण है (There is cause of suffering);
 - (ग) दुःख-निरोध संभव है (There is cessation of suffering) और
 - (घ) दुःख-निरोध का मार्ग है (There is a way leading to the cessation of suffering)।
- इसी प्रकार अन्य भारतीय दर्शन भी दुःख के भावों से ओतप्रोत हैं।

कुछ आलोचक भारतीय दर्शन में दुःखों का विशद वर्णन पाकर इसे निराशावादी (pessimistic) कह बैठते हैं। यह आक्षेप गलत है। भारतीय दर्शन का आरंभ भले ही निराशावाद से होता हो, किंतु इसका अंत आशावाद (optimism) में होता है। भारतीय विचारक केवल दुःख का अस्तित्व स्वीकार कर निष्क्रिय नहीं बन जाते। वे दुःखों के विनाश के लिए उचित मार्ग बताते हैं। इसलिए, भारतीय दर्शन को निराशावादी नहीं कहा जा सकता।

(iii) **विश्व को एक नैतिक रंगमंच मानना**—प्रायः सभी भारतीय विचारक विश्व को एक रंगमंच मानते हैं। मनुष्य अपने अतीत कर्म के अनुसार ईश्वर या प्रकृति की ओर से शरीर,

इंद्रिय एवं वातावरण प्राप्त करके विश्वरूपी रंगमंच पर उपस्थित होता है। जिस प्रकार किसी रंगमंच पर पात्र विभिन्न वस्त्रों में सज-धजकर अपना पार्ट अदा करते हैं और उसके बाद रंगमंच से अलग हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार विश्वव्यापी मंच पर भी विभिन्न प्राणी अपने कर्मों का प्रभाव दिखाकर विदा हो जाते हैं। प्राणियों को अच्छे कर्मों द्वारा विश्व रंगमंच का सफल अभिनेता बनने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार साधारण रंगमंच पर पुराने पात्र स्थान रिक्त करते जाते हैं और नए पात्र उनके स्थान पर आते रहते हैं, उसी प्रकार विश्व भी एक ऐसा मंच है, जहाँ पुराने और नए चेहरे सदैव जाते-आते रहते हैं।

(iv) विश्व की शाश्वत नैतिक व्यवस्था में विश्वास—विश्व में एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था (eternal moral order) का समर्थन प्रायः सभी भारतीय विचारक करते हैं। विश्व में जो भी कर्म हम करते हैं, उसका फल हमें निश्चित रूप से मिलता है। अच्छे कर्मों के लिए पुरस्कार और बुरे कर्मों के लिए दंड का भागी हमें होना पड़ता है। यही कर्म-सिद्धांत (The Law of Karma) है। इस सिद्धांत के अनुसार हमारा वर्तमान जीवन हमारे अतीत जीवन का फल है, और भावी जीवन की आधारशिला हमारे वर्तमान जीवन के कर्मों पर आधृत है। जिस प्रकार भौतिक जगत की व्यवस्था की व्याख्या कार्य-कारण-नियम (Law of Causation) के आधार पर की जाती है, उसी प्रकार नैतिक जगत की व्यवस्था की व्याख्या कर्म-सिद्धांत द्वारा ही संभव है। यहाँ भाग्यवाद या नियतिवाद (fatalism) का खंडन किया जाता है। व्यक्ति का भाग्य-निर्माण स्वयं उसके हाथ में है।

न्यायदर्शन के अनुसार कर्म-सिद्धांत का नियंत्रण ईश्वर द्वारा होता है। ईश्वर ही व्यक्ति को उसके कर्मानुसार सुख या दुःख प्रदान करता है। जैन, बौद्ध, सांख्य, मीमांसा आदि दर्शन कर्म-सिद्धांत को ईश्वर के नियंत्रण से स्वतंत्र मानते हैं। फिर भी, कर्म-सिद्धांत का समर्थन संपूर्ण भारतीय दर्शन की ओर से किया गया है। यह सिद्धांत आशावाद का संचार करता है। शुभ कर्म बुरे भाग्य को भी अच्छा बना देते हैं। निष्काम कर्म के क्षेत्र में कर्म-सिद्धांत लागू नहीं होता। विश्व-कल्याण के लिए किए गए निष्काम कर्म व्यक्ति को कर्म-सिद्धांत के बंधन में नहीं डालते।

(v) आत्मा के अस्तित्व में विश्वास—चार्वाक और बौद्ध को छोड़कर संपूर्ण भारतीय दर्शन आत्मा की सत्ता में अखंड विश्वास रखता है। यहाँ आत्मा को शरीर से भिन्न एक आध्यात्मिक सत्ता कहा गया है। यह नित्य (eternal) एवं अविनाशी (indestructible) है। भारतीय विचारक तत्वज्ञान के लिए आत्मज्ञान को आवश्यक बताते हैं। शंकर ने तो आत्मज्ञान (self-realization) को ही ब्रह्मज्ञान (realization of Brahma) माना है। इस प्रकार, प्रायः संपूर्ण भारतीय दर्शन आत्मा को एक नित्य, अविनाशी, आध्यात्मिक सत्ता के रूप में स्वीकार करता है। उपनिषदों एवं वेदों ने भी आत्मा के महत्त्व पर काफी बल दिया है।

आत्मा के स्वरूप को लेकर भारतीय दर्शन में कई विचारधाराओं का जन्म हुआ है। चार्वाक के अनुसार चेतन शरीर ही आत्मा है। बौद्धों के अनुसार आत्मा चेतना का प्रवाह (stream of consciousness) है। विलियम जेम्स (W. James) के विचार से बौद्धमत मिलता-जुलता है। जैनदर्शन के अनुसार आत्मा या जीव चैतन्ययुक्त है। इसमें चार प्रकार की पूर्णता पाई जाती है—अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य और अनंत आनंद। न्याय-वैशेषिक के अनुसार चेतना (consciousness) आत्मा का स्वाभाविक गुण न होकर आकस्मिक गुण (accidental property) है। मीमांसादर्शन के अनुसार भी चेतना आत्मा का आकस्मिक गुण ही है। इसके विपरीत, सांख्यदर्शन आत्मा को चैतन्यस्वरूप मानता है। इसके अनुसार चैतन्य आत्मा का आवश्यक गुण (essential property) है। यह ज्ञाता तो है, किंतु आनंदविहीन एवं अकर्ता है। शंकर के अनुसार चैतन्य आत्मा का आवश्यक गुण है। इन्होंने आत्मा या ब्रह्मा को 'सच्चिदानंद' (सत् + चित् + आनंद) कहा है। इनके अनुसार आत्मा संख्या में एक है, किंतु अन्य दार्शनिकों ने इसकी संख्या अनेक बताई है।

(vi) अज्ञान दुःख एवं बंधन को उत्पन्न करता है और ज्ञान से मोक्ष मिलता है— भारतीय दर्शन में अज्ञान को बंधन (bondage) और दुःख का कारण बताया गया है।

जन्म-मरण एवं पुनर्जन्म के चक्र में पड़कर दुःख झेलना ही बंधन है। जन्म-पुनर्जन्म के जाल से मुक्त हो जाना ही मोक्ष (liberation) कहलाता है। प्रायः सभी भारतीय विचारक अज्ञानता (ignorance) को दुःखों की जननी मानते हैं। बुद्ध ने अज्ञान को दुःखों का मूल कारण बताया है। शंकर के अनुसार भी व्यक्ति अज्ञानवश आत्मा और ईश्वर में द्वैत मानकर बंधनग्रस्त होता है। इन सभी विचारकों ने बंधन एवं दुःख दूर करने का प्रमुख साधन ज्ञान को बताया है। तत्त्वज्ञान व्यक्ति को बंधन एवं दुःख से मुक्ति दिलाकर मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

(vii) आत्मनियंत्रण एवं एकाग्रचिंतन पर जोर—मोक्ष की प्राप्ति के लिए मस्तिष्क से बुरे विचारों को निष्कासित करके उत्तम विचारों को प्रतिष्ठित करना एवं आत्मसंयम रखना भी अनिवार्य माना गया है। मस्तिष्क से दूषित भावनाओं को समूल नष्ट करने के लिए एकाग्रचिंतन आवश्यक है। इसके लिए प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में 'योग' की महत्ता स्वीकार की गई है। बुरे विचारों से मुक्ति दिलाकर उत्तम विचारों को मस्तिष्क में भरने में योग महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

एकाग्रचिंतन के साथ-साथ आत्मसंयम (self-control) भी मोक्ष के लिए आवश्यक माना गया है। इंद्रियों पर नियंत्रण रखकर ही हम वासनाओं, तृष्णाओं, राग-द्वेष एवं अन्य तुच्छ प्रवृत्तियों को अपने वश में रख सकते हैं। चार्वाक के सिवा अन्य सभी भारतीय विचारकों ने आत्मनियंत्रण को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बताया है।

आत्मसंयम पर अत्यधिक जोर देने के कारण कुछ आलोचक भारतीय दर्शन पर आत्मनिग्रह एवं संन्यास का आक्षेप लगाते हैं, किंतु यह आक्षेप निराधार है। भारतीय दर्शन कभी इंद्रिय-दमन का पाठ नहीं पढ़ाता। यह तो इंद्रियों को अच्छे मार्ग पर लाने एवं इनके सुधार पर जोर देता है। आत्मा को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए भी भारतीय विचारक शरीर, मन, प्राण आदि के समुचित विकास पर पूर्ण ध्यान देते हैं। इसलिए यहाँ आत्मनिग्रह, इंद्रिय-दमन या संन्यास के लिए कोई स्थान नहीं है। यहाँ संन्यास-जीवन से गार्हस्थ्य-जीवन का महत्त्व जरा भी कम नहीं है।

(viii) जीवन का चरम लक्ष्य मोक्षप्राप्ति है—चार्वाक के सिवा संपूर्ण भारतीय दर्शन मोक्ष को ही जीवन का चरम लक्ष्य (ultimate end) मानता है। दुःखरहित अवस्था को ही मोक्ष कहते हैं। कुछ अन्य विचारकों ने इसे आनंदमय अवस्था बताया है। इस प्रकार मोक्ष के दो पक्ष हैं—निषेधात्मक (negative) पक्ष और भावात्मक (positive) पक्ष। निषेधात्मक रूप से मोक्ष दुःखरहित अवस्था है और भावात्मक रूप से यह आनंदमय अवस्था है। मोक्ष दो प्रकार के होते हैं—जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति। शरीर धारण करते हुए इसी जीवन में मुक्त हो जाना 'जीवन्मुक्ति' है। मृत्यु के बाद शरीर छोड़कर मुक्ति पाना ही 'विदेहमुक्ति' है। मोक्ष को निर्वाण, कैवल्य आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। भारतीय दर्शन ज्ञान को मोक्ष का एक साधन मानता है। मोक्ष सर्वोच्च साध्य (highest end) है। यह किसी अन्य साध्य का साधन नहीं हो सकता।

मोक्ष को सर्वोच्च साध्य मानने के कारण कुछ आलोचक यह आक्षेप करते हैं कि भारतीय दर्शन में व्यावहारिक पक्ष पर अत्यधिक जोर दिया गया है और सैद्धांतिक पक्ष की अवहेलना की गई है। यह आक्षेप निराधार है। भारतीय दर्शन एक ओर 'जीने का एक ढंग' या 'जीवन की एक पद्धति' (a way of life) है, तो दूसरी ओर इसमें तत्त्वमीमांसा, प्रमाणशास्त्र, तर्कशास्त्र आदि विषयों का विशद विवेचन भी पाया जाता है। इस प्रकार, भारतीय दर्शन के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही पक्ष काफी सबल हैं। इसपर आक्षेप करना सर्वथा अनुचित है कि यहाँ सैद्धांतिक पक्ष का बलिदान व्यावहारिकता की वेदी पर कर दिया जाता है। भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण समन्वयात्मक (synthetic) है। यहाँ सिद्धांत और व्यवहार (theory and practice) दोनों का अपूर्व सामंजस्य दीख पड़ता है।